कार्यक्रम • सीएसएसआरआई में आयोजित गोल्डन जुबली कॉन्फ्रेंस में देश विदेश के वैज्ञानिकों ने किया चिंतन-मंथन

'ग्लोबल लेवल पर डिमांड बढ़ाने को कृषि उत्पादन में करना होगा वेल्यू एडिशन'

भास्कर न्यूज | करनाल

अंतरराष्ट्रीय जैव लवणता कृषि केंद्र दुबई की महानिदेशक डॉ. इस्महाने एल्योफी ने कहा कि भारत के पास अच्छी खासी कृषि भूमि है, लेकिन भारत को अपने कृषि उत्पाद की ग्लोबल लेवल पर डिमांड बढ़ाने के लिए उसमें वेल्यू एडिशन करने की जरूरत है। किसानों में अवेयरनेस की कमी है। अमरेंथस, किनोवा व मिलेट जैसी अधिक मुनाफे वाली फसलों को अपनाना चाहिए। इनका रेट 500 से 800 प्रति किलो तक है। खास बात यह है कि इनमें न्यूट्रीशियन भी भरपूर है, यह जल्दी से सड़ता भी नहीं और ट्रांसपोटेशन में भी परेशान नहीं आती है। गोल्डन जुबली कांफ्रेंस के टी ब्रेक के दौरान पत्रकारों के सवालों के जवाब में उन्होंने यह बात कही।

संबोधित करते कृषि वैज्ञानिक।

करनाल. केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित वैज्ञानिक।

डॉ. इस्महाने एल्योफी ने कहा कि किसानों की आमदनी बढ़ाने व अपने उत्पादों के लिए कृषि उत्पादों के लिए अच्छी मार्केट पाने के लिए उत्पादों में वेल्यू एडिशन के साथ उसकी प्रोसेसिंग पर भी जोर देना होगा। मूल्य संवर्धन के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर, इरिगेशन व ट्रांसपोटेशन को भी बेहतर बनाना पड़ेगा। प्रोसेसिंग के साथ-साथ वैराइटी में बदलाव लाना होगा। जनता व किसानों को जागरूक होना होगा। उन्हें अपने अधिकारों व डिमांड का पता होना चाहिए। किसान व वैज्ञानिकों को एक दूसरे सीखकर जलवायु परिवर्तन के मद्देनजर वैरायटियों को लाना चाहिए। प्रोडक्शन के मामले में ताइवान से सीखा जा सकता है। कृषि प्रसार से संबंधित विभाग व एजेंसी के अधिकारियों, सरकार व जनता के बीच का गैप खत्म किया जाना चाहिए। सरकार को भी हॉर्टिकल्चर को बढ़ावा देना चाहिए।

भारत के पास अच्छे प्राकृतिक सोर्स हैं

अफ्रीकन एशियन रूरल डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन के जनरल सेक्रेटरी वाशफी हसन ईएल सरैहीन ने कहा कि भारत के पास अच्छे प्राकृतिक सोर्स हैं। किसान जागरूक होकर नई टैक्नोलॉजी को अपनाएं, गुड मार्केटिंग मैनेजमेंट सीखें तथा वैश्विक जरूरतों को ध्यान में रखकर ऑर्गेनिक खेती पर भी काम करें। भारत में ग्रामीण क्षेत्र में ग्रोथ स्लो है। स्वास्थ्य समस्याएं हैं। सी फूड पर ध्यान देना चाहिए। अफ्रीका व एशिया और इंडिया में सांस्कृतिक विविधता हैं तो कुछ समानताएं भी हैं। यहां पर खेतीबाड़ी में लवणता व जलवायु, पानी व सरकारी नीतियों आदि में समानताएं हैं। इसलिए एक दूसरे से सीख लेकर आगे बढ़ने की जरूरत है। विज्ञान, समाज व सरकार जब तीनों एक दूसरे सीखेंगे तभी समस्याओं का समाधान होगा। इस मौके पर डॉ. आरके सिंह ने कहा कि पानी को किसान मुफ्त मानता आया है, जबकि पंजाब व हरियाणा में अधिक पानी के प्रयोग से ही भूमि में लवणता आई है।